७

कहता है ?

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

पारसी धर्म क्या कहता है ?

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

सर्व - सेवा - संघ - प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी

प्रकाशक : मन्त्री, सर्व सेवा संघ,
राजघाट, वाराणसी

संस्करण : प्रथम : दिसम्बर, १९६३ : ३,०००
द्वितीय : फरवरी, १९६५ : ५,०००

कुल प्रतियाँ : ८,०००

मुद्रक : नरेन्द्र भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस,
गायघाट, वाराणसी

मूल्य : ६० पैसे

Title : PARSI DHARMA KYA KAHATA HAI ?
Author : Shrikrishna Datta Bhatta
Subject : Religion
Publisher : Secretary,
Sarva Seva Sangh,
Rajghat, Varanasi
Edition : Second
Copies : 5,000 February, '65
Total Copies : 8,000
Price : 60 Paise

प्रकाशकीय

'सत्का स्वीकार करो, असत्का त्याग। सत् ही सोचो, सत् ही बोलो, सत्पर ही चलो!' यह है प्रभु जरथुश्त्रका आदेश।

पारसी धर्ममें आदिसे अन्ततक एक ही बातपर जोर दिया गया है कि मनुष्यको सत्पर चलना चाहिए। उसे सत्य, प्रेम और करुणाका आचरण करना चाहिए।

हमारी 'धर्म क्या कहता है?'—पुस्तक-मालाकी यह सातवीं पुस्तक है। इस मालामें वैदिक धर्म (तीन भाग), जैन, बौद्ध, यहूदी, ताओ, कनफ्यूश, ईसाई, इस्लाम और सिख धर्मपर अभी तक १२ पुस्तकें निकली हैं। सभी धर्मोंकी एक ही बुनियाद है : सत्य, प्रेम और करुणा।

हम मानते हैं कि हमारी इस पुस्तक-मालाका सर्वत्र स्वागत होगा।

अनुक्रम

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥

ऋग्वेदके पहले मण्डलके पहले सूक्तका पहला मंत्र है यह। ऋषि अग्नि का आवाहन करता है। अग्निदेवकी वंदना करता है।

वैदिक ऋषियोंका दैनिक कृत्य था यज्ञ।

अग्निकी उपासना

पारसी धर्ममें भी यज्ञका वैसा ही स्थान है, जैसा वैदिक धर्ममें। पारसियोंमें अग्निकी उपासना उनके धर्मका विशेष अंग है। अग्नि उनके यहाँ सदा जलती रहती है—रात दिन, आठ पहर, चौंसठ घड़ी।

अग्निकी पूजासे लगता है कि वैदिक ऋषि और पारसी दोनों ही आर्योंकी संतान हैं। दोनों फूल साथ-साथ फूले हैं। दोनोंके मूल

स्थानके बारेमें मतभेद है, पर इस बातमें तो सभी एकमत हैं कि आर्य और पारसी एक हैं। पहले दोनों साथ-साथ रहते थे। बादमें बिछुड़ गये।

भाषामें समानता

वेदकी भाषा संस्कृतमें और पारसी धर्मग्रन्थ अवेस्ताकी भाषामें बहुत कुछ साम्य है। थोड़ेसे उदाहरण लीजिये :

संस्कृत शब्द	अवेस्ताका शब्द	अर्थ
वाक्	वाक	बोलना
मन	मन	विचार करना
दा	दा	देना
अस्ति	अस	होना, है
कर	कर	करना
मर	मर	मरना
माप	मा	नापना
जननी	जनी	स्त्री
काम	काम	इच्छा
मर्त्य	मर्त्य	मरणशील
गौ	गौ	बैल
वीर	वीर	मनुष्य
पद	पद	पैर
आप	आप	जल
वात	वात	वायु
पंच, अष्ट, नव	पंच, अष्ट, नव	पाँच, आठ, नौ
यज	यस्न	यज्ञ

संस्कृत शब्द	अवेस्ताका शब्द	अर्थ
आर्यमान्	आर्यमान	आतिथ्यकारी देवता
ऋत	अरत, अष	ऋत, सत्य
विप्र	विप्र	वक्ता
होतार	ज़ोतार	होतार
सोम	होम	सोम
श्रद्धा	ज्रज़्दा	श्रद्धा
कवि	कवि	साधु
द्रुः	द्रुग	दस्यु

अवेस्ताका ऋषि अपने देवता मित्रकी पूजा करते हुए कहता है :

तॅम्	अमवन्तॅम्	यज़तॅम्
सूरॅम्	दामोहु	सॅवि.श्तॅम्
मिथ्रॅम्	यज़ाइ	ज़ओ थ्राब्यो ॥

संस्कृतमें इसे इस प्रकार कहेंगे :

तम्	अमवन्तम्	यजतम्
शूरम्	धामसु	शविष्ठम्
मित्रम्	यजै	होत्राभ्यः ॥

अर्थात् उस बलवान्, शूरवीर, सब प्राणियोंके लिए कल्याण करनेवाले देवता मित्रकी मैं आहुतियोंसे पूजा करूँगा।

रीति-रिवाज

पारसी और वैदिक रीति-रिवाजोंमें भी कुछ समानता है। स्त्रियोंको भी धर्म-कार्य करनेका, पुरोहिती करनेका अधिकार है। हिन्दुओंकी तरह इनके यहाँ भी उपनयनका, जनेऊका संस्कार होता है। जल, वायु, आदिको अशुद्ध करना पाप माना जाता है।
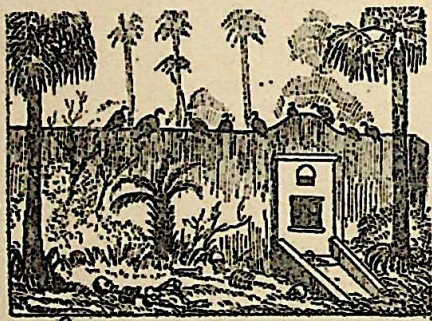
दुखमाका संस्कार, मृतकका संस्कार है—पृथ्वीको अपवित्र होनेसे वचानेका। सूर्य-किरणोंके नीचे शवको रख देते हैं, जिससे पक्षी उसे खाकर तृप्त हो सकें।

प्राचीन संस्कार

पारसी लोग आठवीं शताव्दीके आरम्भमें भारत आये। पहले वे भारतके पश्चिमी तटपर खम्भातकी खाड़ीके देव नामक द्वीपमें उतरे। कुछ साल वहाँ रहनेके वाद वे संजनके लिए रवाना हुए। वहां के हिन्दू राजा जदिराणाके राज्यमें वे जा वसे। उन्होंने राजाको अपने रीति-रिवाजोंका और अपने विश्वासोंका जो विवरण दिया था, उसमें कहा था :

(१) हम लोग प्रभु होरमज़्दकी, सूर्यकी और पांच तत्त्वोंकी पूजा-उपासना करते हैं।

(२) हम लोग जव नहाते हैं, प्रार्थना करते हैं, अग्निमें हवन करते हैं और भोजन करते हैं, तो उस समय मौन धारण करते हैं।

(३) हम जब धार्मिक उत्सव मनाते हैं, धार्मिक कार्य करते हैं, तो उसमें धूप, दीप, सुगंध और फूलोंका उपयोग करते हैं।

(४) हम गौकी पूजा करते हैं।

(५) हम पवित्र वस्त्र धारण करते हैं। हम कमीज, कुष्टी, टोपी आदि पहनते हैं।

(६) विवाहके अवसरपर हम संगीत और भजनोंका आनन्द लेते हैं। खूब गाते-बजाते हैं। उत्सव मनाते हैं।

(७) अपने घरकी स्त्रियोंको हम गहने पहनाते हैं। उन्हें लगानेके लिए सुगंधित पदार्थ देते हैं।

(८) मुक्तहस्तसे दान करना हम अपने धर्मका अंग मानते हैं। तालाव और कुएँ खोदवाकर पानीकी व्यवस्था करना हम विशेष रूपसे उत्तम दान मानते हैं।

(९) पुरुषों और स्त्रियों, सभीके प्रति सहानुभूति प्रकट करना हम अपना कर्तव्य मानते हैं।

(१०) गोमूत्रको हम पवित्र मानते हैं। शुद्धि आदिमें हम उसका उपयोग करते हैं।

(११) हम सब जब प्रार्थना करते हैं अथवा भोजन करते हैं तो पवित्र मेखलाका उपयोग करते हैं।

(१२) यज्ञमें हम धूप-दीपका उपयोग करते हैं।

(१३) हम प्रतिदिन पांच वार प्रार्थना करते हैं।

(१४) पति-पत्नी सदाचार से रहें और पवित्र जीवन वितायें, इसपर हम विशेष ध्यान देते हैं।

(१५) हम प्रतिवर्ष अपने पितरोंका श्राद्ध करते हैं।

(१६) हमारे परिवारकी स्त्रियाँ जब गर्भवती होती हैं, तब और उसके बाद हम उन्हें विशेष संयममें रखते हैं।

पारसियोंके ये रीति-रिवाज और संस्कार वैदिक रीति-रिवाजोंसे कितना मिलते हैं, यह वात इससे सहज ही समझमें आ जायगी।

आदर्शोंमें समानता

वैदिक आदर्शोंमें और पारसी आदर्शोंमें वहुत कुछ समानता है।

वैदिक धर्ममें सत्य, प्रेम, दान, दया, सेवा, न्याय, सदाचार, श्रम, स्वावलम्वन, शौच, गो-सेवा आदि पर जोर दिया गया है। पारसी धर्ममें भी वही वात है। दोनोंके आदर्श एक दूसरेसे वहुत कुछ मिलते-जुलते हैं।

पारसियोंके ईश्वर होरमज्द सत्कार्योंसे प्रसन्न होते हैं—यह है पारसी धर्मकी आधार-शिला। वैदिक धर्म भी तो यही कहता है कि सत्यकी नाव धर्मात्माको पार लगाती है :

सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्।

हुमत   हूख्त   ह्वर्श्त !

सत् विचार करो । सत् वचन बोलो । सत् कर्म करो ।

यह है पारसी धर्मका पवित्र आदर्श ।

पारसी धर्मका जो वृक्ष है, उसका एक मोटा तना है, दो वड़ी
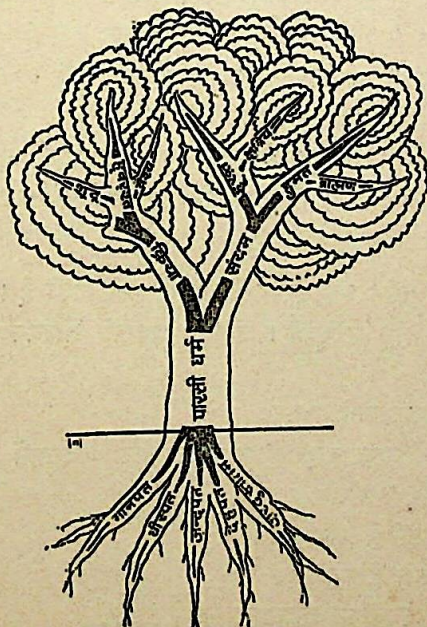
शाखाएँ हैं, तीन शाखाएँ हैं, चार छोटी शाखाएँ हैं और पांच जड़ें हैं :

१. तना : मूल साधन

२. बड़ी शाखाएँ : क्रिया और संयम

३. शाखाएँ : सद्-विचार, सद्-वचन, सत्-कर्म

४. छोटी शाखाएँ : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—कर्मके अनुसार चार जातियाँ

५. जड़ें : पंचविध शासन व्यवस्था :

(१) मानपत (घरका मुखिया)
(२) वीस्पत (गाँवका मुखिया)
(३) जंदपत (कबीलेका मुखिया)
(४) देहपत (प्रान्तीय मुखिया)
(५) जरथुश्त्रोतम् (सबसे बड़ा पारसी पुजारी)।

इन सबके ऊपर है शाहोंका भी शाह, सारे संसारका स्वामी।[1]

ईश्वर

पारसी धर्ममें एक ईश्वरकी उपासना की जाती है। इस धर्मके संस्थापक हैं, प्रभु जरथुश्त्र। उन्होंने ईश्वरको 'होरमज़्द' के नामसे पुकारा।

होर, अहुर माने असुर।

संस्कृतमें असुर कहते हैं राक्षसको, पर अवेस्तामें इसका अर्थ है—सुर, देव, भगवान्।

मज़्द कहते हैं महान्को।

मज़्द बना है महत्से।

---

१. पहेलवी : 'सिकन्द गुमानिक विजार' अध्याय १

इसलिए होरमज़्द या अहुर मज़्दका अर्थ हुआ—महान्+देव=महादेव।

कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि होर या अहुर है चेतन जगत और मज़्द है जड़ जगत। व्यापक प्रकृति अर्थात् सबको जन्म देनेवाली आदि-शक्ति। होरमज़्द है—जड़ और चेतन जगत का स्वामी, परमात्मा।

यह ईश्वर एक है, अनादि है, अनन्त है, पूर्ण है, पवित्र है, शिव है, सत्य है, ऋत है, प्रकाशमान है। सबका स्वामी है।

उसका पवित्र नाम है, अहू वइर्यो।

उसका पवित्र नाम है, अषॅम् वोहू।

ऐसे ही उसके अन्य अनेक नाम हैं।

सत् और असत्

ईश्वरने सत्की रचना की है। सत्में जीवन है, प्रकाश है और सभी अच्छी बातें हैं। असत्में मृत्यु है, अन्धकार है और सभी बुरी बातें हैं। मनुष्यको चाहिए कि वह सत्को ग्रहण करे और असत्का त्याग करे।

मनुष्यका जन्म ही इसलिए हुआ है कि वह सत्को ग्रहण करे। उसके विचार सत् हों। उसके वचन सत् हों। उसके कर्म सत् हों। इस प्रकार वह पृथ्वी पर सत्का और प्रेमका राज्य स्थापित करे।

मनुष्यका कर्तव्य

पारसी धर्ममें बताया गया है कि मनुष्यको सदा सत्कर्म करते रहना चाहिए। मनुष्यका कर्तव्य है कि वह :

सबसे प्रेम करे। सबकी सेवा करे।

ईश्वरकी पूजा-उपासना करे।

देवताओं और संतोंका आदर करे।

सभी सत्कर्मोंमें मदद करे। उनमें हाथ बँटाये।

सभी भले पशुओंकी रक्षा करे। उनपर दया करे।

दान दे। सवपर करुणा करे।

न्याय पर चले। श्रम करे। अपने पैरों पर खड़ा हो।

असत्से सदा दूर रहे। बुराइयोंको नष्ट करे।

ईश्वरपर विश्वास रखकर सत्का सदा समर्थन करते रहनेसे मनुष्य अपना कर्तव्य पूरा कर सकता है।

ईश्वरके सात अंग

होर मज्दके सात अंग माने गये हैं। होरमज्दके अलावा छह और हैं : तीन मातृपक्षके हैं, तीन पितृपक्षके।

होर मज्द

वह्मन	अष वहिश्त	शहरॅवर्	स्पॅदारमत्	ख्वरदात्	अमर्दात्
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)

होरमज्द है परम प्रभु।

वह्मन है अच्छा मन, प्रेम या ज्ञान---भक्तिमार्ग।

अष वहिश्त है पवित्रता, सत्य, ऋत—ज्ञान मार्ग।

शहरॅवर है शक्ति, वल, सामर्थ्य—कर्म मार्ग।

स्पॅदारमत् है नम्रता, विश्वास।

ख्वरदात् है पूर्णता।

अमर्दात् है अमरता—अमृतत्व।

ईश्वरके साथ प्रेम और पवित्रता, शक्ति और नम्रता, पूर्णता और अमरता रहेगी ही। इन्हीं दैवी गुणोंसे मनुष्य पूर्ण हो सकता है। अमर हो सकता है।

असत् का विरोध

पारसी धर्ममें असत्‌के विरोध पर बड़ा जोर दिया गया है। स्पेंता मैन्यू है, शुद्ध आत्मा। अग्रा मैन्यू है, दुष्ट आत्मा। अग्रा मैन्यूका, अहि-रामनका, द्रुज—दुर्जनका, दएवा—राक्षसका विरोध करना आव-श्यक है। ठीक भी है, असत्‌के विरोधसे ही तो सत्‌की प्रतिष्ठा हो सकेगी।

पारसियोंके धर्मग्रन्थ अवेस्ताके यस्न भागका आरम्भ होता है इन मंत्रोंसे :

अषॅम् वोहू ॥
यथा अहू वइर्यो ॥
फ़वराने मज़्द यस्नो ज़रथुश्त्रिश्
वीदअेंवो अहुर-ट्कअेषो हावनॅअे
अषओने अषहे रथ्वे यस्नाइच वह्माइच
क्ष्नओथ्राइच फ़्रसस्तयअेच।...

चतुर्विध विश्वास

पारसी अपनी इस प्रार्थनामें कहते हैं :
मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं मज़्दका पुजारी हूँ।
मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं जरथुश्त्रका पुजारी हूँ।
मैं 'दएवों' को अस्वीकार करता हूँ।
मैं अहुरोंका भक्त हूँ।

मज़्द, जरथुश्त्र और अहुरकी उपासना करना और 'दएवों'—(राक्षसों) का, असत्‌का तिरस्कार करना—यह है पारसी धर्मका चतुर्विध विश्वास।

उनकी सारी पूजा-उपासनाका मूल आधार यही है।

पारसी धर्मग्रंथोंमें इसी विश्वासपर सर्वत्र जोर दिया गया है।

अवेस्ता

पारसियों का धर्मग्रंथ है अवेस्ता। कहते हैं कि मूल अवेस्तामें २० लाख पंक्तियाँ थीं, पर बादमें उसका बहुत-सा अंश लुप्त हो गया। आज अवेस्ताका जो अंश मिलता है, वह इस प्रकार है :

१. यस्न (इसमें गाथा भी शामिल हैं)।

२. वीस्परत्।

३. यश्त।

४. वेंदीदाद या वीदेवदात।

५. खुर्दह् अवेस्ता (छोटा अवेस्ता)।

६. हाधोख्त नस्क, विस्तास्प शास्त नस्क आदि।

इनमें गाथाएँ सबसे पुरानी मानी जाती हैं। कहते हैं कि प्रभु जरथुश्त्रके मुखसे निकली पवित्र वाणी उनमें संकलित है। अन्य यस्न और अवेस्ताके दूसरे भाग बादके हैं।

सात यस्नों (हा ३५ से ४१) की एक और गाथा है हप्तङ्हाइति। उसमें हा ४२ प्रार्थनाके रूपमें शामिल है। यह गाथा गद्यमें है, पद्यमें नहीं। यह पहली अवेस्ताके पहलेकी और पांच गाथाओंसे बादकी गाथा है।

अवेस्तामें होरमज़्द, अग्नि और दूसरे देवताओंकी पूजा, उपासनाके मंत्र तथा नीति और आचारके उपदेश भरे पड़े हैं।

वेंदीदादमें खेती करने, उपयोगी पशुओंकी सार-संभाल करने, पृथ्वी, जल, अग्नि आदिकी रक्षा करने, पवित्र जीवन बिताने आदिपर विशेष जोर दिया गया है।

यश्तमें पारसी देवताओंकी कथाओंका चमत्कारसे भरा वर्णन खूब मिलता है।

पहेलवी

पहेलवी भाषामें भी पारसी साहित्य है। पाँचवीं शताब्दीमें यह भाषा उन्नतिपर थी। बादमें इसकी कला घट गयी।

पहेलवीमें मुख्य ग्रंथ हैं: बुंदहिश्न, वोहमन यश्न, दिनकर्त, शयस्त-ला-शयस्त, दीनाई मैनोकी खिरत, शिकंद गुमानिक विजार, दातिस्तान-ए-देनिक, विचिताकिहा-ए-ज़ातस्परम, अर्तक विराज़ नामक, पहेलवी रिवायत आदि।

फारसीमें भी पारसी धर्मका कुछ साहित्य है। जैसे, सददर, सद दरबन्दए हुश, जरतुश्तनामा, शाहनामा, दाविस्तान आदि।

धर्मका सार

गाथामें, अवेस्तामें, पहेलवीमें सत्पर जोर देनेकी बात बार-बार कही गयी है। पारसी धर्मग्रंथोंके पाठसे पारसी धर्मका सार यही निकलता है:

(१) सबसे ऊपर है ईश्वर। सबसे ऊँची सत्ता है उसकी। सारी सृष्टि और सारी अच्छी चीजें उसीने बनायी हैं। उसका नाम है, होरमज़्द।

(२) जीवन और प्रकाशका दाता है, होरमज़्द। सत्का प्रतीक है वह।

(३) मृत्यु और अंधकारका दाता है, अग्रा मैन्य या अहिरामन। असत्का प्रतीक है वह।

(४) सारा संसार सत् और असत्में बँटा है। सत्के उपासक होरमज़्दकी ओर जाते हैं, असत्के अनुयायी अहिरामनकी ओर।

(५) मनुष्य स्वतंत्र है, चाहे जिस मार्गको चुने। उसकी सद्-गति और दुर्गति उसीके हाथमें है। वह असत्के मार्ग पर चला जाय और फिर उसके लिए पछताये, तो वह सन्मार्गपर लौट सकता है। वह अपना उद्धार कर सकता है।

(६) सतका वाहरी प्रतीक है, अग्नि।

इसीलिए पारसी लोग अग्निकी उपासना करते हैं।

(७) सद्विचार, सद्वचन और सत्कर्मसे ही मनुष्यका कल्याण होगा।

वोहू क्षथ्रॅम् तोइ मज्दा अहुरा
अपअेमा वीस्पाइ यवे।
हुक्षथ्रस्तू नॅ ना वा नाइरी
वा क्षअेता उवोयो अङ्ह्वो हातॉम् हुदास्तॅमा ॥[१]

हे होरमज़्द, तू हमपर ऐसी कृपा कर कि हम तेरे कल्याणमय राज्यमें सदा निवास करें। हे परम दयालु परमेश्वर, तू हमपर और प्रत्येक स्त्री-पुरुषपर दयालु हो। हम सवपर तेरा कल्याणदायी शासन चले।

---

१. यस्न, हा ४१।२

: ३ :
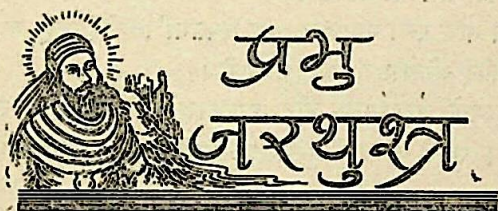
यँवाो मज़्दा अहुरा। पइरी जसाइ वोहू मनङ्हा।
मइब्यो दावोइ अह्वाो। अस्त्वतस्चा ह्यत् चा मनङ्हो।
आयप्ता अषात् हचा। याइश् स्पँ ̆तो दइदीत् ख्वाथ्रे ॥[1]

"हे होरमज़्द ! वहूमनके द्वारा मेरे तनपर, मेरे मनपर तू अपना आशीर्वाद वरसा, जिससे मैं पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकूँ। तेरे दैवी न्याय-का मैं पालन करूँ। जो लोग उस पर चलते हैं, उन्हें तू प्रकाशकी ओर ले जाता है।..."

जरथुश्त्र उस समय तीस वरसके थे। द्रोण पर्वतपर ध्यान करते-करते एक दिन उनकी साधना सफल हुई। कहते हैं कि उन्हें ईश्वरके दर्शन प्राप्त हुए। उनके मुखसे पवित्र 'गाथा' फूट पड़ी।

जन्म और बचपन

ईसासे कोई ६०० साल पहलेकी वात है।

पूर्वी ईरान और कास्पियन समुद्रके दक्षिण-पश्चिम माडिया नामकी एक जाति रहती थी। उसीके मगी नामके गोत्रमें, पुरोहितोंके वंशमें जरथुश्त्रका जन्म हुआ।

---

१. अवेस्ता, यस्न, हा २८।१

उनके वंशका नाम था 'स्पितमा'। स्पितमा माने ज्योतिर्मय। पिताका नाम था पौरुशास्प।

इनका नाम रखा गया 'जरथुश्त्र स्पितमा'। कोई उन्हें कहते हैं, जरदस्तु, कोई जोरोस्टर, कोई जरदूशी।

जरथुश्त्रके जन्मस्थान और जन्मकाल, दोनोंके बारेमें लोगोंमें मतभेद है। उनके जीवनके शुरूके ३० वर्षोंका भी पूरा विवरण नहीं मिलता।

वीश्तास्पपर प्रभाव

गाथाओंमें प्रभु जरथुश्त्रकी पवित्र भावनाएँ भरी पड़ी हैं। उन्हें सत्यका जो दर्शन हुआ, उसे वे जन-जनमें फैलानेके लिए उत्सुक हुए। दस-बारह वर्षतक उनके उपदेशोंका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। पर जब पूर्वी ईरानके बैक्ट्रीया राज्यके राजा वीश्तास्पके दरबारमें जाकर उन्होंने अपना संदेश सुनाया, तो राजापर बहुत असर पड़ा।

होरमज़्द, अषा, (सत्य) आदिकी बातें राजा वीश्तास्पको पूरी तरह जँच गयीं और उसने प्रभु जरथुश्त्रकी वाणी देश-विदेशमें पहुँचानेकी भरसक कोशिश की।

बलिदान

सतहत्तर वर्षकी आयुमें प्रभु जरथुश्त्र बलखमें मन्दिरकी वेदीपर प्रार्थना कर रहे थे, तभी उनके विरोधियोंने उन पर हमला किया। लोग उनकी हत्यापर तुल गये। उन्होंने भी प्रसन्नतापूर्वक अपना बलिदान चढ़ाते हुए विरोधियोंसे कहा :

'होरमज़्द तुम्हें क्षमा करे, जैसे मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ !'

यानीम् मनो यानीम् वचो
यानीम् श्यओथ्नॅम् अषओनो ज़रथुश्त्रहे ।
फ़रा अमॅषा स्पॅं्ता गाथाो गॅउर्वाइन् ।
नॅमो वॅ गाथाो अषओनीश् ॥[1]

पवित्र प्रभु जरथुश्त्रके विचार, उनकी वाणी और उनके कार्य 'अषा' का, सत्यका, ज्ञानका मार्ग है। पवित्रात्मा स्पॅं्ता उनकी गाथाओंको स्वीकार करें। हे पवित्र गाथाओ, तुम्हें प्रणाम ह।

हिन्दुओंको गीता, सिखोंको जपुजी, बौद्धोंको धम्मपद, मुसलमानों-को कुरान जैसी प्यारी है, वैसे ही पारसियोंको अवेस्ताकी गाथा प्यारी ह। प्रभु जरथुश्त्रके पवित्र मुखसे निकली पवित्र वाणी है यह !

गाथाएँ पाँच हैं :

१. अहुनवइति गाथा (यस्न—२८ से ३४) ।
२. उश्तवइति गाथा (यस्न—हा ४३ से ४६) ।
३. स्पॅं्ता मइन्युश् गाथा (यस्न—हा ४७ से ५०)
४. वोहूक्षथ्र गाथा (यस्न—हा ५१) ।
५. वहिश्तोइश्ति गाथा (यस्न—हा ५३) ।

अवेस्ताके यस्न भागमें कुल ७२ हा (अध्याय) हैं। इनमेंसे १७ हामें गाथाएँ हैं।

ये सब पद्यमें हैं : मंत्र, गीत और भजन।

आइये, हम इनकी हलकी-सी झाँकी करें।

---

१. अवेस्ता, यस्न, हा २८।०

अहुनवइति गाथा

सत् और असत् : १ :

अह्या यासा नॅमङ्हा। उस्तानजस्तो रफ़ॅध्रह्या।
मइन्यॅउश् मज़्दा पओउर्वीम्। स्पॅ॑तह्या अषा वीस्पॅ॑ग् श्यओथना।
वङ्हॅउश् ख्रतूम् मनङ्हो। या क्षनॅवीषा गॅउश्चा उर्वानॅम् ॥[१]

हे होरमज़्द ! तू सबसे आदि है और सबसे श्रेष्ठ है। स्पेन्ता मैन्यूको, विशुद्धात्माको प्रसन्नता देनेवाला है। मैं हाथ फैला-कर, अत्यन्त विनम्रतापूर्वक तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरे सभी कर्म अषासे, सत्यसे भरे हों और मुझे तेरा वहमन मिले, प्रेम मिले जिससे मैं 'गउश्चा उर्वानम्', सारी सृष्टिको प्रकाशित कर सकूं, सुख पहुँचा सकूँ।

'गउश्चा उर्वानम्' कहते हैं, गौकी या बैलकी आत्माको। गौ और बैल ठहरे ईरानके निवासियोंके परम प्रिय पशु। दूध देनेवाले और अन्न देनेवाले। सारी सृष्टिके प्रतीक माने गये हैं ये !

दाइदी अषा ताँम् अषीम्। वङ्हॅउश् आयप्ता मनङ्हो।
दाइदी तू आर्मइते। वीश्तास्पाइ ईषॅम् मइब्याचा।
दोस्तू मज़्दा क्षयाचा। या वॅ माँथ्रा स्रॅवीम् आराददो ॥[२]

हे अषा, हे सत्य, हे ऋत ! तू मुझे वह आशीर्वाद दे, जो अच्छे लोगोंको देता है। वहमन दे, प्रेम दे। हे आर्मइते ! तू मुझे भी शक्ति

---

१. यस्न, हा २८।१। २. वही, २८।७

दे और वीश्तास्पको भी। हे मज़्दा! तू हमें, अपने भक्तोंकी पूरी सत्ता दे, जिससे हम तेरे पवित्र शब्दका सब जगह प्रचार कर सकें।

मज़्दा सर्वज्ञ है

मज़्दाो सख़्वारॅं मइरिश्तो। या ज़ी वावॅरॅज़ोइ पइरी-चिथीत्।
दअेवाइश्चा मश्याइश्चा। याचा वरॅषइते अइपी-चिथीत्।
ह्वो वीचिरो अहुरो। अथा नॅं अङ्हत् यथा ह्वो वसत्॥

अषा कहता है: हे मज़्दा! तू उन सब बातोंको जानता है, जो भूतकालमें की गयी हैं। तू उन सब बातोंको जानता है, जो भविष्य-

धर्मके प्रतीक

१. यस्न, हा २९।४

में की जानेवाली हैं। फिर वे बातें, चाहे मनुष्योंने की हों, चाहे दएवों—दुष्टों, राक्षसोंने। हे अहुर ! तू ही उनका विचार करने वाला है, उनका फैसला करनेवाला है। हे प्रभो ! तू सर्वज्ञ है। तेरी इच्छा पूरी हो।

सत्‌को चुनो

> अत् ता वक्ष्या इषें तो। या मज्दाथा ह्यत् चीत् वीदुषे।
> स्तओताचा अहुराइ। येस्न्याचा वङ्हेंउश् मनङ हो।
> हुमाँज्द्रा अषा येचा। या रओचेंबीश् दरेंसता उर्वाज़ा ॥[1]

ज़र्‌थुश्त्र कहता है : जो लोग समझदार हैं और जो दोनों मैन्यूके बारेमें, सत् और असत्‌के बारेमें, जाननेकी रुचि रखते हैं, उनके लिए मैं कहता हूँ। मैं अपाके द्वारा होरमज़्दकी प्रार्थना करता हूँ। मैं तेरे सामने अषाका, सत्यका वर्णन करूँगा, जिससे तुझे प्रकाश मिले और तू पूर्ण हो।

> अत् ता मइन्यू पओउरुये। या येंमा ख़्वफ़ना अस्त्वातेंम्।
> मनहिचा वचहिचा। श्यओथनोइ ही वह्यो अकेंम्चा।
> आओस्चा हुदाओङ्हो। अॅरेंश् वीश्याता नोइत् दुश्दाओङ्हो ॥[2]

शुरूमें दो मैन्यू थे, मनुष्यकी दो स्थितियाँ थीं : १. मन, वचन और कर्मसे सत्‌को ग्रहण करना। २. मन, वचन और कर्मसे असत्‌को ग्रहण करना। जो अच्छे थे, समझदार थे, उन्होंने सत्‌को ग्रहण किया। जो बुरे थे, समझदार नहीं थे, उन्होंने असत्‌को ग्रहण किया।

> अत् चा ह्यत् ता हेंम् मइन्यू। जसअेतेंम् पओउर्वीम् दज़्दे।
> गअेम्चा अज्याइतीम्चा। यथाचा अङ्हत् अपेंमेंम् अङ्हेंहुश्।
> अचिश्तो द्रेंग्वताँम्। अत् अषाउने वहिश्तम् मनो ॥[3]

१ यस्न हा ३०।१। २ वही, ३०।३। ३ वही, ३०।४

इस तरह जब ये दोनों मैन्यू एक साथ प्रकट हुए, तो उनमेंसे एकने जीवन दिया, दूसरेने मृत्यु दी। यह स्थिति मनुष्यके जीवनके अन्ततक जारी रहेगी। जो लोग असत्के, द्रुजके पीछे चलेंगे, उनका हाल बुरा होगा और जो लोग अषाके, सत्के पीछे चलेंगे, उनका कल्याण होगा।

असत्से दूर रहो

अयाो मनिवाो वरता। यँ द्रॅग्वाो अचिश्ता वॅरॅज़्यो।
अषम् मइन्युश् स्पॅनिश्तो। यँ ख़्रओज़्दिश्तॅंग् असॅनो वस्ते।
यएचा क्ष्नओषॅन् अहुॅरम्। हइथ्याइश् श्यओथनाइश् फ़्रओरॅत् मज़्दाँम्॥[१]

इन दोमेंसे जो दुष्ट हैं, बुरे हैं, उन्होंने द्रुजका रास्ता चुना। वे बुरे काम करने लगे। जो अच्छे थे, उन्होंने होरमज़्दका, अषाका, सत्यका प्रकाशमय रास्ता चुना।

अयाो नोइत् ॲरॅश् वीश्याता। दएवाचिना ह्यत् ईश् आ-दॅबओमा।
पॅरॅस्मनॅंग् उपा-जसत्। ह्यत् वॅरॅनाता अचिश्तॅम् मनो।
अत् अएषॅमॅम् हॅंद्वारॅंता। या बाँनॅयन् अहूम् मरॅतानो॥[२]

जो दएवा थे, राक्षस थे, वे यह फैसला नहीं कर सके कि इन दोमेंसे हमें कौन-सा रास्ता चुनना है। वे सन्देहमें पड़ गये और उन्होंने असत्का रास्ता चुन लिया। वे अएषमाकी ओर, क्रोध और हिंसाके राक्षसकी ओर दौड़ गये। इस तरह उन्होंने मनुष्यका आध्यात्मिक जीवन दुःखमय बना दिया।

---

१. यस्न, हा ३०।५। २. वही, ३०।६

अह्माइचा क्ष्था जसत् । मनङ्हा वोहू अषाचा ।
अत् कॅह्र्पॅम् उतयूयितीश् । ददात् आर्मइतिश् आॅन्मा ।
अअेषाँम् तोइ आ अङ्हत् । यथा अयङ्हा आदानाइश् पओउरुयो ।।[1]

ईश्वरसे डरनेवाले लोगोंको उसकी सत्ता, उसकी अषा, उसका सत्य, प्रेम और न्याय प्राप्त होता है । आर्मइते, धरती माता उसके शरीरको भरपूर शक्ति दे, जिससे वह क्रोधके राक्षससे अपनी रक्षा कर सके । जो लोग ऐसी अग्नि-परीक्षामें पास होते हैं, उन्हें हे मज़्दा ! आपकी और आपकी दैवी शक्तियोंकी प्राप्ति होगी ।
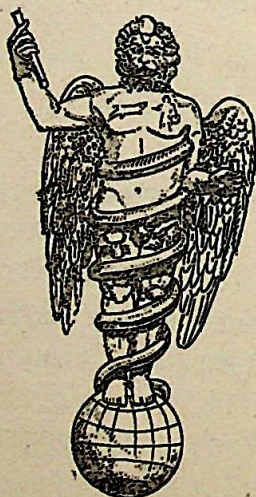
१. यस्न, हा ३०।७

अत्̣ चा यदा अअेषाँम् । कअेना जमइती अअेनङ्हाँम् ।
अत्̣ मज़्दा तइब्यो क्षथ्रॅम् । वोहू मनङ्हा वोइवीदाइते ।
अअेइब्यो सस्ते अहुरा । योइ अषाइ ददॅन् जस्तयो द्रुजॅम् ॥[1]

जब पाप करनेवालोंको उसका बुरा फल भोगना पड़ेगा, तो ऐ होरमज़्द, वे समझ पायेंगे कि क्या है तेरी शक्ति और क्या है तेरी सत्ता ! उनपर अषा, तेरा सत्य प्रकट होगा, जिससे वे द्रुजको, गलत रास्तेको छोड़कर सच्चे रास्ते पर आना सीखेंगे ।

अत्̣ चा तोइ वअेम् ख्यामा । योइ ईम् फ़्रॅरषॅम् कॅरॅनाउन् अहूम् ।
मज़्दोस्चा अहुरोङ्हो । आ मोयस्त्रा बरना अषाचा ।
ह्यत्̣ हथ्रा मनो बवत्̣ । यथ्रा चिस्तिश् अङ्हत्̣ मअेथा ॥[2]

आओ, हम मज़्दाके अधिकारी बनकर अपनेको सदा ताजा और प्राणवान् महसूस करें । हम संसारको आगे बढ़ायें । अषाके, सत्यके, विश्वव्यापी प्रेमके हम सन्देशवाहक बनें, जिससे हम चिश्तीकी ओर, ज्ञानके प्रकाशकी ओर एकाग्रतासे बढ़ सकें ।

अदा ज़ी अवा द्रूजो । अवो बवइती स्कॅ̣दो स्पयथ्ह्या ।
अत्̣ असिश्ता यओजॅ̣ते । आ-हुषितोइश् वङ्हॅउश् मनङ्हो ।
मज़्दो अषख्याचा । योइ जज़्ॅ̣ते वङ्हाउ स्नवही ॥[3]

जब सत्पर चलनेवाली शक्तियाँ अषा, मज़्दा और वह्मनके साथ मिलकर आगे बढ़ेंगी, तो सर्वनाशसे प्रेम रखनेवाले द्रुजका, असत्का पत्ता ही कट जायगा ।

---

१. यस्न, हा ३०।८ । २. वही, ३०।९ । ३. वही, ३०।१०

ह्यात् ता उर्वाता सषथा । या मज़्दाो ददात् मश्याोङ्हो ।
ख्वीतिचा अॅनॅइती ह्यात् चा । दरॅगॅम् द्रॅग्वोदॅब्यो रषो ।
सवचा अषवब्यो । अत् अइपी ताइश् अङ्हइती उश्ता ॥[१]

हे मरणशील मानव ! सुख और दुःखके सम्बन्धमें मज़्दाने जो नियम बनाये हैं, उन्हें तुम समझो । जो लोग द्रुजकी ओर जायँगे, असत् मार्ग पर जायँगे, उन्हें बहुत दिनोंतक कष्ट भोगना पड़ेगा । जो लोग अषाकी ओर जायँगे, सत्-मार्गपर चलेंगे, उन्हें अनन्त सुख मिलेगा । उनपर प्रभुका प्रकाश चमकेगा ।

कतारॅम् अषवा वा । द्रॅग्वाो वा वरन्वइते मज्यो ।
वीद्वाो वीदुषे म्रओतू । मा अवीद्वाो अइपी-दॅबावयत् ।
व्दी नॅ मज्दा अहुरा । वङ्हेॅउश् फ्रवक्ष्ता मननङ्हो ॥[२]

दो रास्ते हैं : एक सत्, दूसरा असत् । इन दो मेंसे कौन किसे चुनता है ? कौन अषाका, सत्यका मार्ग चुनता है ; कौन द्रुजका, असत्य-का ? समझदारोंको चाहिए कि वे लोगोंको सत् मार्गका उपदेश दें । ऐसा न हो कि अज्ञानी लोग दूसरोंको गलत रास्तेपर खींच ले जायँ । हे होरमज़्द, तू हमपर अपना प्रेम बरसा ।

मा चिश् अत् वॅ द्रॅग्वतो । माँथ्राँस्चा गूश्ता सास्नाोस्चा ।
आ ज़ी दॅमानॅम् वीसॅम् वा । षोइथ्रॅम् वा दख्यूम् वा आदात् ।
दुषिताचा मरकॲचा । अथा इंश् साज्दूम् स्नइथिषा ॥[३]

इसलिए तुममेंसे किसीको भी द्रुजकी, दुष्टकी बात नहीं सुननी चाहिए । यदि तुम उसकी बात सुनोगे, उसका उपदेश मानोगे तो वह

---

१. यस्न, हा ३०।११। २. वही, ३१।१७। ३. वही, ३१।१८

घर, गाँव, नगर, प्रांत और देश—सबको आग लगाकर भस्म कर देगा। सबको वह संकट और विपत्तिमें डाल देगा। इसलिए अपनी पूरी ताकतसे उसका विरोध करो।

अमरता पानेका मार्ग

मज़्दाो ददात् अहुरो। हउर्वंतो असॅरॅंतातस्चा।
वूरोइश् आ अषख़्याचा। ख्वापइथ्यात् क्षथ्रह्या सरो।
वङहॅउश् वज़्दरॅ मनङहो। यॅ होइ मइन्यू श्यओथनाइश्चा उर्वथो॥[1]

जो आदमी मन, वचन और कर्मसे प्रभु मज़्दाके आदेशका पालन करता है, अषाके, सत्यके मार्ग पर चलता है, उसे होरमज़्द पूर्णता देता है, अमरता देता है। शक्ति देता है, प्रेम देता है।

ह्वो मा ना स्रवाो मोरॅंदत्। यॅ अचिश्तॅम् वअॅनङहे अओगॅदा।
गाँम् अषिब्या ह्वरॅंचा। यस्चा दाथॅंग् द्रॅग्वतो ददात्।
यस्चा वास्त्रा वीवापत्। यस्चा वदरॅ वोइज़्दत् अषाउने॥[2]

सचमुच ही वह आदमी प्रभुके संदेशको विगाड़ता है, जो यह कहता है कि पृथ्वी और सूर्यकी ओर दोनों आँखोंसे देखना बहुत गलत है, जो दुष्ट आदमियोंको इनाम देता है, जो खेतोंको और गोचरभूमिको नष्ट करता है, सुखाता है और जो सही रास्ते पर चलनेवाले लोगोंपर हमला करता है।

रफ़ॅध्राइ वोउरु-चषाने। दोइषी मोइ या वॅ अबिफ़्रा।
ता क्षथ्रह्या अहुरा। या वङहॅउश् अषिश् मनङहो।
फ्रो स्पॅंता आर्मइते। अषा दअॅनाो फ्रदक्षया॥[3]

---

१. यस्न, हा ३१।२१। २. वही, ३२।१०। ३. वही, ३३।१३

हे होरमज़्द, मेरी प्रसन्नताके लिए, और दूरदृष्टिके लिए मुझपर तू अतुलनीय क्षथ्रका वरदान दे, जो कि अषाका, सत्यका आशीर्वाद है। हे प्रकाशवती आर्मइते, अपाके द्वारा तू हमें अन्तरात्माका ज्ञान करा। हे करुणामय, तू हमें सत्य दे, प्रेम दे, करुणा दे।

दीनदयाल प्रभु

कत् वँ क्षथ्रॅम् का ईश्तीश्। श्यओथनाइ मज़्दा यथा वाो हल्मी।
अषा वोहू मनङ्हा। थ्रायोइद्याइ द्रिगूम् यूष्माकॅम्।
पर वाो वीस्पाइश परँ वओखॅमा।
दअेवाइश्चाख्रफ्स्त्राइश् मश्याइश्चा ॥[1]

हे प्रभु, कितनी महान् है तेरी शक्ति! हे मज़्दा, मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं तेरे आदेशोंका ठीकसे पालन करूँ, जिससे मैं अषाके, सत्यके रास्तेपर चल सकं; द्रुजसे, कुमार्गसे वच सकूं। जो नम्र हैं, जो दीन हैं, जो गरीव हैं, वे तेरे हैं। उनपर तेरी कृपा रहती है। तेरे लिए हम, सर्वनाश करनेवाले दअेवाका, दुष्ट लोगोंका विरोध करेंगे।

किसान : प्रभुके प्यारे

तत् ज़ी मज़्दा वइरीम्। अस्त्वइते उश्तानाइ दाता।
वङ्हॅउश् श्यओथना मनङ्हो। योइ ज़ी गॅउश् वॅरॅज़ॅने अज़्यााे।
क्ष्माकाँम् हुचिस्तीम् अहुरा। ख्रतॅउश् अषा फ़्रादो वॅरॅज़ॅना ॥[2]

हे मज़्दा, तू उन लोगोंपर अपनी कृपा वरसाता है, जो इस भौतिक जीवनमें अच्छे काम करते हैं और जो धरती माताके साथ सहयोग करते हैं, मेहनतसे उसे जोतकर उपज वढ़ाते हैं। वे तेरे सत्-मार्गपर चलते हैं और अषाके द्वारा तेरे पवित्र उद्देश्योंको पूरा करते हैं।

---

१. यस्न हा ३४।५। २. वही ३५।४

उश्नवइति गाथा

दूसरोंको सुख दो : २ :

उश्ता अह्माइ यह्माइ उश्ता कह्माइचीत् ।
वसॅ-क्ष्यॉस् मज्दा ो दायात् अहुरो ।
उतयूइती तॅवीषी गत् तोइ वसॅमी ।
अषॅम् दॅरॅद्याइ तत् मोइ दा ो आर्मइते ।
रायो अषीश् वङ्हॅउश् गअॅम् मनङ्हो ॥[1]

जो आदमी दूसरोंको सुख पहुँचाता है, उसे सर्वशक्तिमान् होर मज़्द सुख देगा। उसपर वह आशीर्वाद बरसायेगा। हे उतयूइति, मैं तुझसे अमरता और पूर्णताकी प्रार्थना करता हूँ, जिससे तेरे दैवी नियमका पालन कर सकूं। आर्मइतेके द्वारा मुझपर पूर्ण प्रकाश और सत्यका आशीर्वाद बरसा !

अत् चा अह्माइ वीस्पनाँम् वहिश्तॅम् ।
ख़्वाथ्रोया ना ख़्वाथ्रॅम् दइदीता ।
थ्वा चीचीथ्वा स्पॅनिश्ता मइन्यू मज्दा ।
या दा ो अषा वङ्हॅउश् माया ो मनङ्हो ।
वीस्पा अयारॅ दरॅगो-ज्यातोइश् उर्वादङ्हा ॥[2]

दूसरोंको सुख देनेवाले आदमीपर तेरा आशीर्वाद बरसेगा। हे पवित्र मज़्दा, मुझे अपना प्रकाश दे। तूने सत्पथपर चलनेवालोंको

---

१. यस्न, हा ४३।१। २. वही, ४३।२

अपना आशीर्वाद दिया है। मुझे भी अपना आशीर्वाद दें, जिससे हम आजीवन सुखी रहें।

अत् फ़्रवक्ष्या ह्यत् मोइ ऋओत् स्पॅ`तोतॅमो।
वचॅं स्रूइद्याइ ह्यत् मरॅतअेइब्यो वहिश्तॅम्।
योइ मोइ अह्माइ सॅरओषॅम् दाँन् चयस्चा।
उपा-जिमॅन् हउर्वाता अमॅरॅताता।
वङ्हउश् मइन्यॅउश् श्यओथनाइश् मज़्दाो अहुरो॥[1]

मुझसे परम पवित्र शुद्धात्माने जो कहा, वह मैं बता रहा हूँ। मनुष्योंके सुननेके लिए वह सर्वोत्तम सन्देश है। वह कहता है कि जो कोई मेरे शब्दका आदर करेंगे, वे सत्कार्योंके द्वारा पूर्णता और अमरता-की ओर तथा स्वयं होरमज़्दकी ओर बढ़ेंगे।

१- यस्न ४५।५

स्पॅंन्ता मइन्यूश् गाथा

अन्न खूब पैदा करो : ३ :

स्पॅं॒ता मइन्यू वहिश्ताचा मनङ्हा ।
हचा अषात् श्यओथनाचा वचङ्हाचा ।
अह्माइ दाँन् हउर्वाता अमॅरॅंताता ।
मज़्दाो क्षथ्रा आर्मइती अहुरो ॥[१]

जो आदमी मन, वचन और कर्मसे सत्यका पालन करेगा, ईश्वरके नियम, उसकी शक्ति और उसके प्रेमके अनुकूल चलेगा, उसपर होर मज़्द स्पंता मइन्यू, शुद्धात्मा और वहिश्तमनाके द्वारा पूर्णता और अमरता वरसायेगा ।

प्रेमभरे शब्द बोलो

अह्या मइन्यॅउश् स्पॅनिश्तह्या वहिश्तॅम् ।
हिज़्वा उख़्धाइश् वङहॅउश् ॲॲआनू मनङ्हो ।
आर्मतोइश् ज़स्तोइब्या श्यओथना वॅरॅज़्यत् ।
ओया चिस्ती ह्वो प्ता अषह्या मज़्दाो ॥[२]

सबसे उत्तम है वह आदमी, जिसकी जीभसे प्रेम भरे शब्द निकलते हैं । जो दोनों हाथोंसे अच्छे काम, प्रेम और भक्तिभरे काम करता है । मज़्दा ही सत्कर्मोंका पिता है ।

---

१. यस्न, हा ४७।१ । २. वही, ४७।२

धरती माता : आर्मइते

हुक्षथ्रा क्षँ्ताँम् मा नॅ दुशॅ-क्षथ्रा क्षँ्ता ।
वङ्हुयाो चिस्तोइश् श्यओथनाइश् आर्मइते ।
यओज्दाो मश्याइ अइपी जाँथम् वहिश्ता ।
गवोइ वॅरॅज्याताँम् ताँम् नॅ ख्वरॅथाइ फ्रषुयो ।।[१]

'आर्मइते' है, धरती माता ।

हे आर्मइते ! अच्छे चिश्तोसे प्रेरित होकर, अच्छे शासक हमपर शासन करें ।

बुरे लोग हमपर शासन न करें ।

मनुष्यके लिए सबसे अच्छा है कि वह जन्मसे ही पवित्र रहे ।

अन्नकी उपज बढ़ानेके लिए हम हमेशा मेहनत करें ।

हा जी नॅ हुषोइथॅमा हा नॅ उतयूइतीम् ।
दात् तॅवीषीम् वङ्हॅउश् मनङ्हो बॅरॅख्धे ।
अत् अख्याइ अषा मज़्दाो उर्वराो वक्षत् ।
अहुरो अङ्हॅउश् जाँथोइ पओउरुयेह्या ।।[२]

धरती माता हमें निश्चय ही अपनी गोदमें शरण देगी ।

वहूमनकी प्यारी धरती हमें शक्ति देती है, प्रेम देती है और सत्यके जरिये उसमें उपज बढ़ती है ।

होरमज़्द उसमें तरह-तरहकी जीवनदायी उपज करता है ।

---

१. यस्न, हा ४८।५ । २. वही, ४८।६

कदा मज़्दा अषा मत् आर्मइतिश्
जिमत् क्षथ्रा हुषॅइतिश् वास्त्रवइती ।
कोइ द्रॅग्वोदॅवीश् खरू राइश् रामाँम् दाों ते ।
कॅं ग् आ वङ्हॅउश् जिमत् मनङ्हो चिस्तिश् ॥[1]

हे मज़्दा ! वह समय कब आयेगा, जब सत्य, धन-धान्य और गोचरभूमिसे भरी धरती माता और क्षथ्र हमें शरण देंगे । हमें दुष्टोंकी दुष्टतासे कौन शान्ति दिलायेगा ? सद्‌बुद्धि किसे मिलेगी ?

---

१. यस्न, हा ४८।११

सच्चा भक्त कौन ? : ४ :

वोहू क्षथ्रॅम् वइरीम् ।
बागॅम् अइवी-वइरिश्तम् ।
वीदीषॅम्नाइश् ईज़ाचीत् ।
अषा अँतरॅ-चरइती ।
श्यओथनाइश् मज़्दा वहिश्तॅम् ।
तत् नॅ नूचीत् वरॅषाने ॥ [1]

प्रभुने हमें जो वरदान दिये हैं, उनमें सबसे अच्छा वरदान है—अपने मनसे, अपनी इच्छासे किसी भी बातका निर्णय करना । अषापर, सत्यपर चलता हुआ मनुष्य अपनी इस निर्णय करनेवाली शक्तिसे अपने हृदयकी बड़ी-से-बड़ी इच्छा पूरी कर सकता है । हे मज़्दा, मैं इसी क्षणसे वही करूँगा, जो कि हम लोगोंके लिए सबसे अच्छा होगा ।

येह्या मोइ अषात् हचा । वहिश्तॅम् येस्ने पइती ।
वएदा मज़्दो अहुरो । योइ आओङ्हरॅचा हॅंतिचा ।
ताँ यज़ाइ स्वाइश् नामॅनीश् । पइरिचा जसाइ वँता ॥ [2]

जो आदमी मेरा भक्त है और अषापर, सत्यपर चलता है, उसे मैं सच्चा भक्त मानता हूँ । होरमज़्द जानता है कि सन्त कौन हुए हैं, कौन हैं? मैं उनका स्मरण करता हूँ और प्रेम तथा आदरसे उनके निकट जाता हूँ ।

---

१. यस्न, हा ५१।१ । २. वही, ५१।२२

वर-वधूसे दो बातें

साख्वॅनी वज़्यम्नाव्यो कइनिब्यो त्रओमी ।
क्ष्.मइब्याचा वदॅम्नो मॅ ँ्चा ई मॉज़्दज़्दूम् ।
वअॅदोदूम् दअॅनाबीश् ।
अव्यस्ता अहूम् यॅ वङहॅउश् मनङहो ।
अषा वॅ अन्यो अइनीम् वीवॅ ँ्ग्हतू ।
तत् ज्ञी होइ हुषॅनॅम् अङहत् ॥[१]

मैं वधूके लिए और वरके लिए कुछ हितकी सलाह देरहा हूँ। तुम धर्मकी बातें अच्छी तरह समझते हो। जीवनका आदर करना

सीखो। सच्चे हृदयसे प्रेमपूर्ण जीवन बिताओ। अषामें, सत्में तुम एक-दूसरेको मात देनेकी कोशिश करो, क्योंकि इससे मनुष्यको

१. यस्न, हा ५३।५

सुख और प्रसन्नताकी प्राप्ति होती है। सत्से वर और वधू दोनोंका जीवन प्रसन्न रहेगा।

इथा ई हइथ्या नरो अथा जॅनयो।
द्रूजो हचा राथॅमो यॅमॅ स्पषुथा फ़ाइदीम्।
द्रूजो आयेसे होइश् पिथा तन्वो परा।
वयू-बॅरॅदुब्यो दुश्-ख़्वरॅथॅम्।
नॉसत् ख़्वाथ्रॅम् द्रॅग्वोदॅब्यो दॅजीत् अरॅतअेइब्यो।
अनाइश् आ मनहीम् अहूम् मॅरॅं गॅदुये॥[1]

ए वर-वधुओ! तुम सत्पर चलो, द्रुजके मार्गसे, असत्के मार्गसे अपनेको बचानेकी कोशिश करो। जो लोग असत्के आकर्षणमें पड़ते हैं, उनका जीवन दुःख और बदनामीसे भर जाता है तथा उनकी शान्ति जाती रहती है। असत्के मार्गपर जानेसे तुम्हारा बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन नष्ट हो जायगा।

अत् चा वॅ मीज़्दॅम् अङ्हत् अह्या मगह्या।
यवत् आज़ुश् ज़रज़्दिश्तो बूनोइ हख़्तयाो।
परचा म्रओचाँस् अओराचा।
यथ्रा मइन्युश् द्रॅग्वतो अनाँसत्।
परा इवीज़यथा मगॅम् तॅम्।
अत् वॅ वयोइ अङ्हइती अपॅमॅम् वचो॥[2]

जब नवदम्पतीमें सच्चा हार्दिक प्रेम होगा, तो सारी बिरादरीपर, सारी जातिपर उसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। तुम लोग सन्मार्गपर चलोगे तो असत् दूर भाग जायगा। यदि तुम उसपर नहीं चलोगे तो तुम्हें अन्तमें दुःख भोगना पड़ेगा।

१. यस्न, हा ५३।६। २. वही, ५३।७।

दुज़्वरॅनाइश् वअेषो रास्ती तोइ नरॅपीश् अरॅज़ीश् ।
अअेषसा दॅजीत्-अरॅता पॅषो-तन्वो, ।
कू अषवा अहुरो ।
यॅ ईश् ज्यातॅउश् हॅमिथ्यात् वसॅ-इतोइश्चा ।
तत् मज़्दा तवा क्षथ्रॅम् ।
या अरॅज़ॅज्योइ दाही द्रिगओवे वह्यो ॥[1]

तेरे भक्तोंमें दुष्ट लोग विष घोल रहे हैं। मैं उन्हें सत्यपर परदा डालनेवाला पापी मानता हूँ। हे मज़्दा, अषाका देवता कहां है? हे मज़्दा, यह तेरी सत्ता ही है, जिससे तू सदाचारी लोगोंको अधिक महत्त्व देता है। जो हृदयके दीन हैं, नम्र हैं, विनीत हैं, उन्हें तू ऊपर उठाता है।

१. यस्न, हा ५३।९।

अहू वइर्यो : परम पवित्र मन्त्र : १ :

यथा अहू वइर्यो अथा रतुश् अषात् चीत् हचा।
वङ्हॅउश् दज़्दा मनङ्हो श्यओथननाँम् अङ्हॅउश मज़्दाइ।
क्षथ्रॅम्चा अहुराइ आ यिम् द्रिगुव्यो ददत् वास्तारॅम्॥

पारसी धर्मका परम पवित्र मन्त्र है यह। गाथामें, अवेस्तामें जगह-जगह यह मन्त्र आता है। इसमें बताया है कि दीनोंपर दया करनेसे दीनदयाल प्रभु प्रसन्न होते हैं।

जिस तरह राजा शक्तिशाली होता है, उसी तरह अषा, ऋत और सत्यका भण्डार है होरमज़्द। उस प्रभुके निमित्त जो कोई निष्काम भावसे सत्कार्य करता है, गरीबों और दुःखियोंकी सहायता और सेवा करता है, उसपर वह्मकी, ईश्वरीय प्रेमकी वर्षा होगी। प्रभु उसपर अवश्य कृपा करेंगे।

१. यस्न, ०।१५

सबसे पहला शब्द

'अहू वइर्यो' परम पवित्र शब्द है। प्रभुने सबसे पहले इस शब्दकी रचना की। पृथ्वी, जगत्के सभी प्राणी, वृक्ष, अग्नि, मनुष्य आदिकी रचना उसके बाद हुई।[1]

नामसे सद्गति

अहू वइर्योका सतत अखण्डरूपसे जप करना दूसरे सैकड़ों मन्त्रोंसे बढ़कर है।[2] इस मंत्रके जपनेवालेको इस लोकमें परम सुख और आनन्द मिलेगा और परलोकमें भी सद्गति मिलेगी।[3]

प्रभुके अनेक नाम : २ :

पॅरॅसत् जरथुश्त्रो अहुरॅम् मज्दाँम्।
अहुर मज्द मइन्यो
स्पॅनिश्त दातरॅ गअेथनाँम्
अस्त्वइतिनाँम् अषाउम्
कत् अस्ति माँथ्रहे स्पॅ तहे अमवस्तॅमॅम्
कत् वॅरॅथ्रवस्तॅमॅम् कत् ख्वरॅनङ्हस्तॅमॅम्
कत् यास्कॅरॅस्तॅमॅम्॥[4]
कत् वारॅथ्रघ्न्योतॅमॅम् कत् बअेषज्योतॅमॅम्
कत् त्बअेषो–तउर्वयाँस्तॅमॅम्
दअेवनाँम् मश्यानाँम्च।
कत् वीस्पहे अङ्हॅउश्
अस्त्वतो मन अस्ति वीजम्मिश्तॅम्
कत् वीस्पहे अङ्हॅउश्
अस्त्वतो अङ्ह्वाँम् अस्ति वीमरॅंजिश्तॅम्॥[5]

---

१. यस्न १९।३-४। २. वही, १९।५। ३. वही, १९।६
४. यश्त्, हॉरमज्द यश्त् १। ५. यश्त्, हॉरमज्द यश्त् २

जरथुश्त्रने होरमज़्दसे कहा : हे मेरे पवित्र स्वामी ! तूने यह भौतिक संसार बनाया है। तूने यह सृष्टि रची है।

हे पवित्र मज़्दा ! तेरे पवित्र नामका सबसे महत्त्वका, सबसे शक्तिशाली अंग कौन-सा है ? सबसे अधिक विजय किसकी है ? सबसे अधिक असर किसका है ? राक्षसोंको नष्ट करनेमें सबसे अधिक बलशाली कौन है ? दैत्यों और मनुष्योंकी दुर्भावनाओंको नष्ट करनेमें सबसे अधिक समर्थ कौन है ? किसके द्वारा भौतिक संसारकी सुख-सुविधाएँ प्राप्त होती हैं ? वह कौन है, जिसके द्वारा भौतिक जगत्की चिन्ताएँ दूर हो जाती हैं ?

आ अत् म्रओत् अहुरो मज़्दाो ।
अह्माकॅम् नाँम स्पितम जरथुश्त्र यत्
अमॅषनाँम् स्पॅं तनाम्।
तत् अस्ति माँथ्रहे
स्पॅं तहे अमवस्तॅमॅम्
तत् वॅरॅथ्रवस्तॅमॅम्
तत् ख्वरनङ्हस्तॅमॅम् तत् यास्कॅरॅस्तॅमॅम् ॥ [१]

होरमज़्दने उत्तर दिया : हे जरथुश्त्र ! सबसे अधिक बलशाली और इन सब बातोंको पूरा करनेवाला है, मेरा नाम। पवित्र देवताओंका नाम मेरे पवित्र नामका सबसे महत्त्वशाली अंग है।

होरमज़्दके यह कहनेपर जरथुश्त्रने उससे पूछा कि हे स्वामी ! तू हमें अपना ऐसा कोई नाम बता, जो पवित्रसे पवित्र हो, बड़ा-से-बड़ा हो, उत्तम-से-उत्तम हो, अधिक-से-अधिक प्रभावशाली हो, जिससे मैं दएवोंपर विजय प्राप्त कर सकूँ।

---

१. यस्त्, होरमज़्द यस्त् ३

आअत् ऊओत् अहुरो मज़्दो ।
फ़क्स्त्य नाँम अह्मि अषाउम् जरथुश्त्र
वित्यो वाँथ्व्यो थ्रित्यो अवि-तन्यो
तूइर्य अष वहिश्त पुख्थ वीस्प
वोहु मज़्दधात अष-चिथ्र क्स्त्वो यत्
अह्मि ख़तुश् हप्तथो ख़तुमो
अश्तॅमो यत् अह्मि चिस्तिश्
नाउमो चिस्तिवो ॥
दसॅमो यत् अह्मि स्पानो
अअेवं दसो स्पनङ्हो
द्वदसो अहुरो थ्रिदसो सॅविश्तो
चथ्रुदसो इमत् वीद्वअेश्त्वो
पंचदस अवनम्न क्ष्वश्-दस
हात-मरॅनिश् हप्तदस वीस्प-हिषस्
अश्तदस बअेषज्य नवदस यत् अह्मि
दातो वीसाँस्तॅमो अह्मि यत्
अह्मि मज़्दो नाँम ॥[1]
होरमज़्द बोला :
हे पवित्र जरथुश्त्र, मेरा पहला नाम है, अषा (ऋत्) ।
दूसरा है, वाँथ्व्यो (गोधन देनेवाला) ।
तीसरा नाम है, अवितन्यो (शक्तिशाली) ।
चौथा नाम है, अष वहिश्त (पूर्ण सत्य) ।
पाँचवा नाम है, वोहु मज़्दधात (ईश्वरनिर्मित परम शिव) ।
छठा नाम है, ख़तुश् (बुद्धि) ।

---
१. यश्त्, होरमज़्द यश्त् ७, ८

सातवाँ नाम है, ख्रतुमो (वुद्धिमान्)।
आठवाँ नाम है, चिस्तिश् (ज्ञान)।
नवाँ नाम है, चिस्तिवो (ज्ञानवान्)।
दसवाँ नाम है, स्पानो (कल्याण)।
ग्यारहवाँ नाम है, स्पनङ्हो (कल्याणकारी)।
वारहवाँ नाम है, अहुरो।
तेरहवाँ नाम है, सविश्तो (परम पवित्र)।
चौदहवाँ नाम है, इमत् वीद्वअेश्त्वो (परम उदार)।
पन्द्रहवाँ नाम है, अयनम्न (दुर्जेय)।
सोलहवाँ नाम है, हात मरॅनिश् (सच्चा लेखपाल)।
सत्रहवाँ नाम है, वीस्प-हिषस् (सर्वद्रष्टा)।
अठारहवाँ नाम है, वअेपज्य (वैद्य)।
उन्नीसवाँ नाम है, दानो (स्रष्टा)।
वीसवाँ नाम है, मज़्दा।[1]

जरथुश्त्रने माँगा एक नाम और मिले वीस। इतना ही नहीं, दुवारा फिर होरमज़्दने इनके अलावा ५४ नाम और वता दिये :

पायुश्च अह्मि दाताच थ्राताच अह्मि ज्नाताच मइन्युश्च अह्मि स्पॅ ् तोतॅमो वअेषज्य नाँम अह्मि वअेषज्योतॅम नाँम अह्मि आथ्रव नाँम अह्मि आथ्रवतॅम नाँम अह्मि अहुर नाँम अह्मि मज़्दो नाँम अह्मि अषव नाँम अह्मि अषवस्तॅम नाँम अह्मि ख्वरॅनङ्ह नाँम अह्मि ख्वरॅनङ्हस्तॅम नाँम अह्मि पोउरु-दर्श्त नाँम अह्मि पोउरु-दर्श्तॅम नाँम अह्मि दूरअे-दर्श्त नाँम अह्मि दूरअे-दर्श्तॅम नाँम अह्मि॥

स्पश्त नाँम अह्मि वीत नाँम अह्मि दात नाँम अह्मि पात नाँम

1. यस्त् होरमज़्द यस्त् ७,

अह्मि थ्रात नाँम अह्मि ज्नात नाँम अह्मि ज्नोइश्त नाँम अह्मि फ़्षूसो नाँम अह्मि फ़्षूषो-माँथ्र नाँम अह्मि इसँ-क्षथ्रो नाँम अह्मि इसँ-क्षथ्र्योतँमो नाँम अह्मि नाँमो-क्षथ्रो नाँम अह्मि नाँमो-क्षथ्र्योतँमो नाँम अह्मि ॥

अधविश् नाँम अह्मि वीधविश् नाँम अह्मि पइति-पायुश् नाँम अह्मि त्बअेषो तउर्वो नाँम अह्मि हथ्रवन नाँम अह्मि वीस्पवन नाँम अह्मि वीस्पतश् नाँम अह्मि वीस्प-ख्वाथ्र नाँम अह्मि पोउरु-ख्वाथ्र नाँम अह्मि ख्वाथ्रवो नाँम अह्मि ॥

वॅरॅज़ि-सओक नाँम अह्मि वॅरॅज़ि-सवो नाँम अह्मि सॅवी नाँम अह्मि सूरो नाँम अह्मि सॅविश्त नाँम अह्मि अष नाँम अह्मि बॅरॅज़ नाँम अह्मि क्षथ्र्य नाँम अह्मि क्षथ्र्योतँमो नाँम अह्मि हुदानुश् नाँम अह्मि हुदानुश्तॅमो नाँम अह्मि दूरअे-सूक नाँम अह्मि। ताोस्च इमो नामॅनीश् ॥[१]

सच है,

हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता !

होरमज़्द कहता है कि मेरे इन नामोंको तू दिन और रात जपता रह।

अथ इमो नामॅनीश् द्रॅंजयो फ़्स्रव
वीस्याइश् अयाँन्च क्षप़्नस्च॥ [२]

१, यश्त्, होरमज़्द यश्त् १२–१५। २. वही ११

देवाय तस्मै नमः

हे अग्निदेव !

नॅमख्यामही इपूइद्यामही थ्वा मज़्दा अहुरा ।
वीस्पाइश् थ्वा हुमताइश् वीस्पाइश्
हूख़्ताइश् वीस्पाइश् ह्वर्श्ताइश्
पइरी-जसामइदे ॥ [१]

हे अग्निदेव ! होरमज़्दके पुत्र, हम तेरे अधिकसे अधिक निकट पहुँच रहे हैं। हम तुझे प्रणाम करते हैं। हम अपनी गलतियोंको स्वीकार करते हैं। हम तेरी प्रार्थना करते हैं। हम सद्विचार, सद्-वचन और सत्कर्म द्वारा तेरे निकट पहुँचते हैं।

१ यस्न, हा ३६।५

अग्निको प्रज्वलित करनेके लिए जो आदमी सत्यसे पवित्रकर समिधा लाता है, उसपर अग्निदेवका आशीर्वाद वरसता है कि तेरे पशु वढ़ें, तेरे वाल-वच्चे वढ़ें, तेरा मन, तेरा चित्त कार्यशील हो और तेरा जीवन आनन्दसे कटे।[1]

मित्र

नमो मिथ्राइ वोउरु-गओय ओइतॅअे
हज़ङ्रो-गओषाइ बअेवरॅ-चष्मइने।[2]

मैं मित्रको नमस्कार करता हूँ, जिसके हजार कान हैं और दस हजार आँखें।

अय दअेनय फ्रओरॅंत
अहुरो मज्दाो अषव
फ़्रा वोहू मनो फ़्रा अषॅम् वहिश्तॅम्
फ़्रा क्षथ्रॅम् वइरीम् फ़्रास्यॅंत आर्मइति
फ़्रा हउर्वत अमॅरॅतात।[3]

होरमज़्दने कृपा करके मित्रको सारे संसारका मालिकाना सौंप दिया। उसे ऐसा लगा कि मित्र ही सारे संसारके प्राणियोंका स्वामी और गुरु होनेके लायक है।

अन्य देवता

हम संसारके रचनेवाले होरमज़्द, उनके पुत्र अग्नि, जल, सूर्य, चन्द्रकी उपासना करते हैं।[4]

हम अहुर और मित्र, पवित्र देवताओं—अमर, तारागण, अग्नि, जल, वनस्पति, सवको आहुति प्रदान करते हैं।[5]

---

१. यस्न ६२।१०। २. मॅहॅर् यश्त् ९१। ३. मॅहॅर् यश्त् ९२।
४. यस्न १६।४। ५. यस्न १।११–१२

अनाहिता

आअत् हीम् जइध्यत् ।
अवत् आयप्तॅम् दज्दि मे ।
वङ्हि सॅविश्ते अरॅद्वी सूरे अनाहिते ।
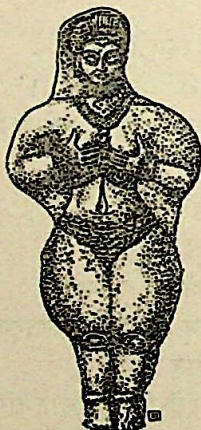
अनाहिताका, जलकी देवीका, उपजकी देवीका मैं ध्यान करता हूँ। उसले आशीर्वाद माँगता हूँ। वह मुझे वरदान दे :

अनुमतॅअे दअेनयाइ
अनुख्तअे दअेनयाइ
अनु-वर्श्तॅअे दअेनयाइ ॥ [१]

मैं धर्मके अनुसार सोचूं, धर्मके अनुसार बोलूं और धर्मके अनुसार करूँ, चलूं।

१ आवाँ अरदी सूर यश्त ८८ ।

फ़्रवशी

अषाउनाँम् वङ्‌हीश् सूरो स्पें तो फ़वषयो यज़मइदे ।[१]

फ़्रवशी हैं पवित्र देवता, जो सत्कार्योंकी सफलतामें सहायता पहुँचाते हैं। उन्हें प्रणाम !

अषा : सत्य सबसे बढ़कर : ४ :

अषा, सत्य सबसे बढ़कर है।[२]

होरमज़्द कहता है कि जो सच्चे हृदयसे अषाकी, सत्यकी प्रशंसा करता है, वह मेरी ही प्रशंसा करता है, समुद्रकी प्रशंसा करता है, पृथ्वीकी प्रशंसा करता है, पशुओंकी प्रशंसा करता है, वनस्पतियोंकी प्रशंसा करता है। वह सभी अच्छी चीजोंकी प्रशंसा करता है।[३]

हमारे घरोंमें सत्यकी प्रतिष्ठा हो, असत्य हमसे दूर हो।[४]

खेती करो : ५ :

यो यओम् कारयेइति हो अषॅम् कारयेइति ।[५]

अर्थात् :

यः यवम् किरति सः ऋतम् किरति ।

जो आदमी जौ बोता है, वह सत्य बोता है।

अन्न बोना ही धर्मको चलाना है। धर्मको आगे बढ़ाना है। इसलिए बार-बार अन्न बोना चाहिए।

जो आदमी अपनी बाँयी और दाहिनी भुजासे जमीन नहीं जोतता, वह सदा दूसरोंके दरवाजेपर जाकर रोटीकी भीख माँगेगा।[६]

---

१. फ़्रवर्दीन् यश्त्, २६। २. वेंदीदाद, १९।४७। ३. यस्न २१।३।
४. वही, [illegible] ५. वेंदीदाद ३।३१। ६. वही, ३।२८

धरती माता कब खुश होती है ? : ६ :

पहला स्थान, जहाँ धरती माता सबसे ज्यादा खुश होती है, वह है, जहाँ श्रद्धालु व्यक्ति हाथमें समिधा, दूध आदि लेकर 'मित्र' और 'राम ह्वस्त्रा'—गोचरभूमिके देवताकी प्रार्थना करता है।

दूसरा स्थान, जहाँ धरती माता सबसे ज्यादा खुश होती है, वहाँ है, जहाँ कोई पवित्र मनुष्य अपना मकान बनाता है, जिसमें अग्नि जलती रहती है, चौपाये रहते हैं, बाल-बच्चे रहते हैं, अच्छे नौकर रहते हैं और जीवनके लिए सभी अच्छी चीजें रहती हैं।

तीसरा स्थान, जहाँ धरती माता सबसे ज्यादा खुश होती है, वह है, जहाँ सत्यपर चलनेवाला मनुष्य अन्न, घास और फल बोता है, उन्हें पैदा करता है तथा सूखी जमीनको पानीसे सींचता है।

चौथा स्थान, जहाँ धरती माता सबसे ज्यादा खुश होती है, वह है, जहाँ गायें तथा अन्य पशुओंकी खूब वृद्धि होती है।

पाँचवाँ स्थान, जहाँ धरती माता सबसे ज्यादा खुश होती है, वह है, जहाँ गायों और अन्य पशुओंसे खूब खाद होती है।[1]

1. वंदीदाद ३।१—६

हुमतनाँम् हूख़्तनाँम् ह्वर्श्तनाँम् ।[1]

हम पवित्र विचार करें। पवित्र बोलें। पवित्र काम करें। हमारे विचार, हमारे वचन और हमारे कर्म——सब पवित्र हों।

तत् अत् वइरीमइदी अहुरा मज़्दा
अषा स्रीरा ह्यात् ईं मइनिमदिचा
वओचोइमाचा वॅरॅज़िमाचा
या हातांम् श्यओथननाँम्
वहिश्ता ख़्यात् उवोइब्या अहुब्या ॥[2]

हे परम प्रभु परमेश्वर, तेरा सत् हमारे साथ हो। हम केवल वही सोचना चाहते हैं, वही कहना चाहते हैं और वही करना चाहते हैं, जिससे इहलोक और परलोक, दोनोंमें हमारा कल्याण हो।

अव पधो अव ज़स्तॅं
अव उषि दारयध्वॅम्

मज़्दयस्न जरथुश्त्रयो दाइत्यनाँम्
रथ्व्यनाँम् ह्वर्श्तनाँम् श्यओथ्ननाँम् वरॅज़ाइ पइरि अघाइत्यनाँम्
अरथ्व्यनाँम् दुज़्वर्श्तनाँम् श्यओथ्ननाँम् वरॅज़ाइ वॅरॅज़्यातांम्च इध वोहु वास्त्र्य उयम्न अनुयस्नाइश् दस्ते ॥[3]

प्रभु जरथुश्त्रके भक्तो, अपने पैरों, हाथों और मनोंको तैयार रखो कि वे सत्कर्म करनेमें लेशमात्रकी भी देर न करें। गलत कामोंको हमेशा टालें। इस संसारमें सत्कर्म करनेके लिए विशेष रूपसे उत्सुक रहो, जिससे तुम ब्याजके सहित अपना कर्ज चुका सको।

---

१. यस्न, हा ३५।२। २. यस्न, हा ३५।३।
३. वीस्परद्, कर्दे १५।१

मनुष्यके कर्तव्य

: १ :

दस कर्तव्य

१. किसीकी निन्दा मत करो।
२. मनमें लोभ-लालचका भाव मत रखो;
३. किसीपर क्रोध मत करो।
४. किसी प्रकारकी चिन्ता न रखो।
५. भोग-विलासमें मत डूबो।
६. दूसरोंसे अनुचित डाह मत करो।
७. आलसीपनकी आदत मत डालो।
८. उद्यमी बनो।
९. दूसरोंकी सम्पत्ति न ऐंठो, न हड़पो।
१०. परायी स्त्रियोंसे दूर रहो।[1]

१. दीनाई मैनोकी खिरत, २०।३—७

शत्रुको मित्र वनाओ

मनुष्यके तीन मुख्य कर्तव्य हैं :

१. जो दुश्मन है, उसे दोस्त वनाना।

२. जो दुष्ट है, उसे सदाचारी वनाना।

३. जो अशिक्षित है, उसे शिक्षित वनाना।[1]

पशुओंपर दया करो

मनुष्योंका कर्तव्य है कि वे पशुओंको प्रसन्न रखें। दुष्ट और आलसी लोगोंसे उनकी रक्षा करें। उन्हें अच्छी और गरम जगह वाँधें। उनके लिए घास, भूसा, खलीका पूरा प्रवन्ध करें। छोटे वछड़ोंको उनकी माताओंसे दूर न करें।[2]

पापका प्रायश्चित्त करो

पापके लिए सच्चे जीसे पश्चात्ताप करो। मनसे निश्चय कर लो कि 'ऐसा पाप फिर कभी नहीं करूँगा।' अपने पापको प्रकट कर देना चाहिए। छिपाना ठीक नहीं।[3]

सत् सोचो : २ :

अपने मनमें किसीसे वदला लेनेकी भावना मत रखो।

सोचो कि तुम अपने दुश्मनसे वदला लोगे तो तुम्हें किस प्रकारकी हानि, किस प्रकारकी चोट और किस प्रकारका सर्वनाश भुगतना पड़ सकता है और किस प्रकार वदलेकी भावना तुम्हें लगातार सताती रहेगी। सो, दुश्मनसे वदला मत लो।

यदि तुम अपने मनसे छोटी-सी भी वदलेकी भावना निकाल वाहर करोगे तो तुम नरककी भयंकर यातनासे वच जाओगे।

---

१. [illegible] २०।६। २. वही, १५।९-१०। ३. वही, ८।८-९

जो तुम्हारे साथ बुराई करे, उसके साथ बुराई करनेका षड्यंत्र मत बनाओ। किसीके प्रति बुराई करनेकी बात मत सोचो। बुराई करनेवालेको उसकी बुराईका बदला मिलेगा ही।

बुराई करनेवालोंके लिए भी मनमें सद्विचार रखो। अच्छे विचारोंसे ही उनका सामना करो। यही तुम्हारा आदर्श होना चाहिए।

इन बातोंसे अपनेको कड़ाईसे बचाओ :

क्रोध, पराई निन्दा, असत्य, कंजूसी, उजड्डपन, जिद्दीपन, लूट-पाट और अच्छाईका विरोध।

बदलेकी भावनामें आकर कभी कोई पापकर्म मत कर डालो। मनमें सदा अच्छे विचारोंको ही स्थान दो।[१]

जो बीत चुका है, उसकी बात ही मनसे निकाल दो। अभी जो आया नहीं है, जो भविष्यमें होगा, उसके लिए परेशान न हो।

सुखमें फूलो नहीं, दुःखमें रोओ नहीं। उतार-चढ़ाव किसमें नहीं होता ?[२]

सत् बोलो : ३ :

जो कोई जो कुछ कहे, उसे सुन लो, पर उसे जहाँ-तहाँ दुहराते मत फिरो।

किसीपर ताना न कसो। जो दूसरोंपर ताना कसता है, वह खुद तानेका शिकार बनता है। उसकी शान जाती रहती है।

जो लोग झूठे हैं, बातका बतंगड़ बनाते हैं, उनकी बातें मत सुनो। किसीसे झूठ मत बोलो।

---

१. पहेलवी टेक्स्ट्स से। २. वही।

सही बात हो या झूठी, कसम कभी मत खाओ ।

जहाँतक सम्भव हो, अपने साथियोंके साथ इतनी बातें मत करो कि वे ऊब जायँ ।

जो बात कहो, साफ कहो ।

जब बोलो तो अच्छी तरह सोच-समझकर ही बोलो । कभी-कभी बोलना जरूरी होता है, कभी-कभी न बोलना ।

बोलनेमें हमेशा भलमनसाहत बनाये रखो । कभी अशिष्ट न बनो ।

अपने आप अपनी बड़ाई मत करो । अपने मुँह मियाँ मिट्ठू मत बनो ।

सदा सच बोलो, जिससे सब लोग तुम्हारा विश्वास करें ।

जब बोलो, तब नम्रतासे बोलो ।

यदि तुम चाहते हो कि दूसरे लोग तुम्हारी निन्दा न करें, तो तुम भी किसीकी निन्दा मत करो ।

बोलते समय इस बातका ध्यान रखो कि तुम गुस्सेमें तो नहीं बोल रहे हो ? बिना ठीकसे सोचे-समझे तो नहीं बोल रहे हो ? जो आदमी

इन बातोंका ध्यान नहीं रखता, उसकी बातचीत उस दावानलकी तरह होती है जो जंगलको तो भस्म करती ही है, उसमें रहनेवाले सभी पशुपक्षियों और जीवोंको भी जलाकर भस्म कर देती है ।

ऐसी बात मत बोलो जिसके दो अर्थ निकलते हों।

जिससे जो वादा करो, उसे पूरा करो।

हुर्मी—मजाकको छोड़कर ऐसी कोई बात मत कहो, जिससे कोई खास लाभ न हो। मजाक भी हर समय न करो। मौका देखकर ही मजाक करो।

अपनी जीभपर विवेककी लगाम लगाओ। उसका फल है, अच्छा व्यवहार—फ़र्हंग।[1]

सत्पर चलो : ४ :

जो बात तुम्हें नापसन्द है, वह दूसरोंके लिए मत करो।

जो आदमी गुस्सेसे भरा हो, उससे दूर रहो।

दूसरोंपर प्रहार मत करो। किसीको पीटो मत।

न तो किसीसे बदला लेनेकी इच्छा रखो और न कोई ऐसा काम करो, जिससे किसीको नुकसान पहुँचे।

अपने माता-पिताका, गुरुजनोंका आदर करो। उनसे सीखो। वे जो कहें, उसे ध्यानसे सुनो। उनकी आज्ञाका पालन करो।

जबतक किसीके माँ-बाप जीवित रहते हैं, तबतक वह जंगलमें शेरकी

१. पहलवी टेक्स्ट्ससे

तरह रहता है। उसे किसीका डर नहीं रहता। जिसके माँ-बाप नहीं हैं, वह उस अभागी विधवाकी तरह रहता है, जिसे सब दुतकारते और अपमानित करते हैं।

बड़ोंका कभी मजाक मत उड़ाओ। वे तुम्हारे आदरके पात्र हैं।

अपनी बिसात देखकर ही खर्च करो।

'तेते पाँव पसारिये, जेती लांबी सौर।'

जो तुम्हारे साथ नेकी करे, उसका अहसान मानो।

सबके साथ नम्रताका व्यवहार करो।

उदार रहो, जिससे तुम स्वर्ग—गरोधमान जा सको।

सदा अपने कर्तव्यका पालन करते रहो।

किसीकी सम्पत्ति मत लूटो। किसीको उसकी सम्पत्तिसे न तो वंचित करो और न ऐसी किसी सम्पत्तिको अपने पास रखो, जो चुरायी हुई है। दूसरेका धन छीनकर अपना धन मत बढ़ाओ।

अन्यायकी ऐसी सम्पत्ति नष्ट हो जायगी या छीन ली जायगी।

चोर कोई चीज दे तो मत लो। उसे अपने पाससे दूर कर दो।

किसी भी आदमीको धोखा मत दो।

दूसरोंके साथ भलाई करो। दूरसे या नजदीकसे जो कोई तुम्हारे पास आये, उसके लिए अपना दर्वाजा खुला रखो। जो ऐसा न करेगा, उसके लिए स्वर्गका दर्वाजा बन्द हो जायगा।

जो सीखो, उसे अमलमें लाओ।

जो पैसा दान या दयाके कामोंमें खर्च नहीं किया जाता, वह दुष्टका अहिरामनका खजाना है।[1]

---

१. पहलवी टेक्स्ट्ससे

पापसे दूर रहो : ५ :

परायी स्त्रियोंको वहकानेकी कोशिश मत करो। उन्हें पापके रास्तेपर मत ले जाओ। यह पाप तुम्हारी आत्माके लिए वड़ा भयंकर है।

पापसे सदा दूर रहो, जिससे तुम डरसे हमेशा मुक्त रहोगे।

दूसरोंको दण्ड देनेके लिए वहुत उतावले मत रहो।

क्रोधमें आकर या वदला लेनेंके लिए ऐसा कोई काम मत कर डालो, जिससे तुम्हारी आत्माका नाश हो।

संग्रह करना है तो केवल अहराईका, सत्कर्मोंका संग्रह करो। केवल उसीका संग्रह अच्छा है, और किसी चीजका नहीं।

अग्नि, जल, गौ, अन्य पालतू पशुओं और कुत्तोंका आदर करो। इनके प्रति पाप करनेसे स्वर्गका रास्ता वन्द हो जायगा।

मनसे, वचनसे, कर्मसे तुमसे जो पाप वने हों, उनके लिए पश्चात्ताप करो। कहो कि मैं पश्चात्ताप करता हूँ कि मुझे जो सोचना था सो नहीं सोचा, जो कहना था सो नहीं कहा, जो करना था सो नहीं किया। मैंने अपने भाइयोंके प्रति किसी भी तरहका जो पाप किया हो या उन्होंने मेरे प्रति किया हो, उसे हे प्रभु, क्षमा करो।[1]

गलत काम न करो

अपने हाथोंको चोरी करनेसे वचाओ।

अपने पैरोंको गलत रास्तेपर जानेसे रोको।

अपने मनको वुरे विचारोंकी ओर जानेसे रोको।

---

१. [illegible]

जो आदमी भले काम करता है, उसे अच्छा फल मिलता है। जो बुरे काम करता है, उसे बुरा।

जो आदमी अपने दुश्मनके लिए गड्हा खोदता है, वह खुद ही उसमें गिरेगा।[१]
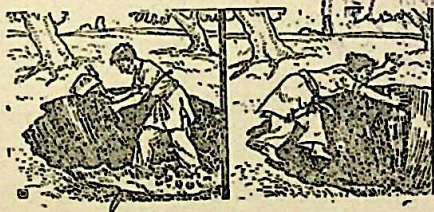
क्रोध मत करो

जब कोई आदमी नाराज होता है, तो वहूमन, प्रेम और सद्-विचार उससे दूर चला जाता है। जबतक वहूमन रहता है, तबतक मनुष्यमें क्रोध आ नहीं सकता।[२]

१. पहेलवी टेक्स्टससे। २. शिकंद गुमानिक विजार, अध्याय ८

पेटू मत बनो

भोजन करनेमें पेटू, बरनीक मत बनो।

जो कुछ सामने आ जाय, वह सब जल्दी-जल्दी पेटमें मत डाल लो।

खाने-पीनेमें संयम रखो, तभी अधिक दिनतक जीवित रह सकोगे। जिस तरह वाणीका संयम आत्माके लिए अच्छा है, उसी तरह खान-पानका संयम शरीरके लिए अच्छा है।[1]

---

१. पहेलवी टेक्स्ट्स से

मांस, मदिरा छोड़ो

गो-मांस मत खाओ। घरमें पलनेवाले गो संपदान—पशुओंका मांस भी मत खाओ। इनका मांस खाओगे तो तुम पापमें पड़ोगे। तुम्हारे हाथ ही नहीं, तुम्हारा मन भी पापमें फँसेगा और वाणी भी।

यदि तुम मांसका एक कौर भी खाते हो, तो तुम्हारा हाथ पापमें पड़ता है। भले ही किसी ऊँटको किसीने किसी जगह मारा हो, यदि तुम उसका मांस खाते हो, तो यही माना जायगा कि तुमने ही उसकी हत्या की। [१]

शराव छोड़ दो

यह साफ है कि शरावसे इस वातकी पहचान हो जाती है कि कौन आदमी भला है और कौन बुरा?

शरावी आदमीकी बुद्धि मारी जाती है। उसका खून कम हो जाता है। उसका जिगर खराव हो जाता है। वह बहुतसे रोगोंका शिकार वनता है। उसकी आँखें कमजोर हो जाती हैं। कान कम सुनते हैं। जीभकी बोलनेकी शक्ति घट जाती है। वह भोजनका भरपूर आदर नहीं करता। वह आलसी वना पड़ा रहता है। उसे जो कहना चाहिए, जो करना चाहिए, सो नहीं करता। उसे अच्छी नींद नहीं आती। सुवह उठता है, तो जी भारी रहता है। वह अपने शरीरको पीड़ा देता हैं। वाल-वच्चों और सगे-सम्वन्धियोंको सताता है। वह दुःखी रहता है। दूसरोंको भी दुःखी करता है।

जव कोई गिरे चरित्रवाला आदमी शराव पीता है, तो वह अपने आपको अफलातून मान बैठता है। वह अपने साथियोंसे झगड़ा करता

---

१. पहलवी टेक्स्ट्स

है। बेकारकी जिद करता है। कड़वी बातें बोलता है। दूसरोंकी निन्दा करता है, चुगली करता है। झूठी बातें करता है। दूसरोंपर कलंक लगाता है। वह भले आदमियोंका साथ छोड़ देता है। स्त्री,
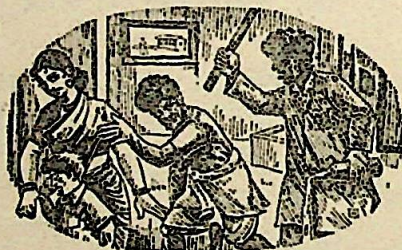
बच्चों, नौकरों आदिके साथ बुरा व्यवहार करता है, उन्हें दुःख देता है। वह अपनी शांतिको अपनेसे दूर भगा देता है और दूसरोंसे वैर मोल ले लेता है।[1]

धरतीकी सेवा करो : ८ :

जमीनको जोतो और भले काम करो। पृथ्वीको, स्पंदरमतको जोतनेसे ही सभी आदमी जीते और पलते हैं।

अगर तुम्हारे पास सम्पत्ति है, तो तुम तरीवाली और अधिक खेती-की जमीन खरीद लो। यदि वह सूद न भी दे, तो मूल कहाँ जाता है ?[2]

१. दीनाई मैनोकी खिरत १५।१०–१८। २. पहेलवी टेक्स्टससे

हम अपनेसे पूछें

पुराने साधु-संतोंने कहा है कि जब कोई स्त्री या पुरुष पन्द्रह वरसका हो जाय, तो उसे इन प्रश्नोंका उत्तर जानना चाहिए :

मैं कौन हूँ ?
मैं किसका हूँ ?
इस धरतीपर मेरा कर्तव्य क्या है ?
मैं होरमज़्दका हूँ या अहिरामनका ?
म सत्‌का उपासक हूँ या असत्‌का ?
मैं मनुष्य हूँ या राक्षस ?
मेरा धर्म क्या है ?
क्या करनेमें मेरा लाभ है, क्या करनेमें नुकसान ?
कौन मेरा मित्र है, कौन शत्रु ?
प्रकाश किससे आता है, अन्धकार किससे आता है ?
दया किससे आती है, क्रूरता किससे आती है ?

हमारा उत्तर यह हो

हमें इस वातका पक्का विश्वास होना चाहिए :
मैं होरमज़्दका हूँ, अहिरामनका नहीं।
मैं देवताओंका हूँ, राक्षसोंका, दएवोंका नहीं।
मेरा पिता है—होरमज़्द, मेरी माँ है—स्पन्दरमत्—धरती।
मैं अपने कर्तव्यका पालन करूंगा, अर्थात् होरमज़्दमें विश्वास रखूँगा। उसका राज्य सदा रहनेवाला है।
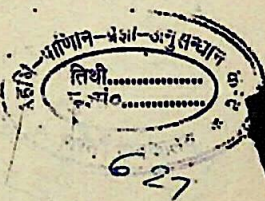
मेरा कर्तव्य : अपने धर्ममें
अभ्यास करना।

मुझमें इस बातका विवेक हो
हानि, पुण्य और पाप प्रकाश औ
अहिरामनकी पूजाके बीच सही नि

मुझे परिवार बसाकर ईमानद
चाहिए।

मुझे खेती करनी चाहिए। ज

मुझे सभी पशुओंके साथ भला व

मुझे अपने जीवनका एक तिहा
और सत्संगमें विताना चाहिए। एक तिहाई
फसल उगानेमें बिताना चाहिए। शेष
मौज करनेमें।

मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं होना
लाभ होता है।

धर्मका एक ही मार्ग है और वह है-
वह है—सद्विचार, सद्वचन और सत्कार्य।

होरमज्द मेरा मित्र है, अहिरामन
प्रकाश है, अहिरामन अंधकार। दया और
क्रूरता आती है—अहिरामन से। होरमज्दके र
लाभ है, अहिरामनके रास्तेपर चलनेमें नुकसान

हे मज्दा, हमें सत् पथपर ले चल!

१. पहेलवी टेक्स्ट्ससे